अध्याय 7

कुषाण कालीन अभिलेख

1. कनिष्क प्रथम कालीन सारनाथ बौद्ध प्रतिमाभिलेख सं० 3 (81 ई०)
(Sarnath Buddhist Image Inscriptions of the time of Kaniska i — Year 3 (= A.D. 81))

स्थान : सारनाथ, जिला–वाराणसी, उत्तर प्रदेश

भाषा : प्राकृत संस्कृत से प्रभावित

लिपि : ब्राह्मी

काल : प्रथम शताब्दी ई० उत्तरार्द्ध, सं० 3 = 81 ई०

विषय : भिक्षु बल द्वारा विभिन्न लोगों के साथ, छत्र और यष्टि की स्थापना, हित और सुख के लिए

सन्दर्भ : इपि० इण्डि०, 8, पृ० 173

मूल पाट

I

1. महरजस्य कणिष्कस्य सं 3 हे 3 दि 20 (+)
2. एताये पूर्वये भिक्षुस्य पुष्यवुद्धिस्य सद्धेयेवि-
3. हारिस्य भिक्षुस्य बलस्य त्रेपिटकस्य
4. बोधिसत्वो छत्रयष्टि [च] प्रतिष्ठापितो
5. बाराणसिये भगवतो च [ ]कमे सहा मात[ा]-
6. पितिहि सहा उपद्धयायाचर्येहि[1] सद्धेयविहारि-
7. हि अंतेवासिकेहि च सहा बुद्धमित्रये त्रेपिटिक-
8. ये सहा क्षत्रपेण[2] वनस्परेन खरपल्ला-
9. नेन च सहा च च[तु]हि परिषाहि सर्वसत्वनं
10. हितासुखार्थ (।।)

संस्कृत छाया

महाराजस्य कनिष्कस्य संवत्सरे 3 हेमन्त 3 दिवसे 22 एतस्यां पूर्वायां भिक्षौ पुष्यबुद्धे सार्द्ध

---

1. वोजेल : उपङ्घायाचेरेहि
2. वनस्पर क्षत्रप था और खरपल्लान महाक्षत्रप था। ये कनिष्क के साम्राज्य के पूर्वी प्रान्त का शासक था।

विहारिणः भिक्षो बलस्य त्रैपिटकस्य बोधिसत्वः छत्रयष्टिः च प्रतिष्ठापितौ वाराणस्यां भगवतः चंक्रमे सह मातृपितृभ्यां सह उपाध्याचार्यैः सार्द्ध विहारिभिः अन्तेवासिकैः च सहबुद्धमित्रया त्रैपिटक्या सह क्षत्रपेण वनस्परेण खरपल्लानेन च सह च चतसृभिः परिषभि-सर्वसत्त्वानां हितसुखार्थम् ॥

हिन्दी अर्थान्तर

महाराजा कनिष्क के शासन काल में संवत्सर 3 हेमन्त 3 दिवस 22 के पूर्व भिक्षु पुष्यबुद्ध के साथ रहने वाले त्रिपिटक के ज्ञाता बल द्वारा बोधिसत्व का छत्र और यष्टि वाराणसी में भगवान बुद्ध के चक्रम पथ में स्थापित किया गया। उसके माता-पिता के साथ उपाध्याय एवं आचार्य के साथ, विहार में रहने वाले शिष्यों के साथ, त्रिपिटक मानने वाले बुद्ध मित्र के साथ, क्षत्रप वनस्पर और खरपल्लान के साथ चारों परिषदों के सभी तत्त्वों के हित और सुख के लिए।

मूल-पाठ

II

1. भिक्षुस्य बलस्य त्रेपिटकस्य बोधिसत्वो प्रतिष्ठापितो।
2. महाक्षत्रपेन खरपल्लानेन सहा क्षत्रपेन वनष्परेन॥

संस्कृत छाया

भिक्षाः बलस्य त्रैपिटकस्य बोधिसत्त्वः प्रतिष्ठापितः। महाक्षत्रपेण खरपल्लानेन सह क्षत्रपेण वनस्परेण।

हिन्दी अर्थान्तर

त्रिपिटक के ज्ञाता भिक्षु बल द्वारा बोधिसत्व के लिए स्थापित किया गया। महाक्षत्रप खरपल्ल और क्षत्रप वनस्पर के साथ

मूल-पाठ

III

1. महाराजस्य क [णिष्कस्य]सं 3 हे 3 दि 20 (+) [2]
2. एतये पुर्वये भिक्षुस्य बलस्य त्रेपिट [कस्य]
3. बोधिसत्वो छत्र य[ष्टि] [च] [प्रतिष्ठापितो] (॥)

संस्कृत छाया

महाराजस्य कनिष्कस्य संवत्सरे 3 हेमन्त 3 दिवसे 22 एतस्यां पूर्वायं भिक्षोः बलस्य त्रैपिटकस्य बोधिस्त्वः छत्रयष्टिः प्रतिष्ठापितौ॥

हिन्दी अर्थान्तर

महाराज कनिष्क के संवत्सर 3 हेमन्त 3 दिवस 22 के पूर्व त्रिपिटक के ज्ञाता भिक्षु बल द्वारा बोधिसत्त्व का छत्र और यष्टि प्रतिष्ठापित किया गया।

ऐतिहासिक महत्त्व

यह अभिलेख सारनाथ से प्राप्त बोधिसत्व की प्रतिमा तथा अठपहले प्रस्तर स्तम्भ के तीन

ओर अंकित है। इसको लिखवाने वाला इनका दाता भिक्षु बल है। इसके द्वारा श्रावस्ती में भी इसी प्रकार के दान का ज्ञान वहाँ से मिले बोधिसत्व प्रतिमा और यष्टि पर अकिंत लेख से प्राप्त होता है। लगता है भिक्षु बल ने विविध बौद्ध तीर्थों की यात्रा किया था। प्रस्तुत अभिलेख तीन खण्डों का है। पहला बड़ा है तथा शेष दो अत्यन्त छोटे हैं। इसमें केवल बौद्ध धर्म स्थल, देवता आदि की ही चर्चा की गई है। यह कनिष्क सं॰ ३ के हेमन्त ऋतु के 22वें दिन का उत्कीर्ण है। इसमें छत्र की भी चर्चा है जो प्राप्त नहीं हो सका है। इस अभिलेख से लगता है कि तीनों मूर्ति, यष्टि और छत्र एक साथ एक अंग के रूप में कोरे गये थे। पर प्राप्त प्रतिमा और यष्टि अलग-अलग मिले हैं।

यह अभिलेख अभी तक प्राप्त कनिष्क के अभिलेखों में सबसे पहला अभिलेख माना जाता था। पर अभी हाल में कौशाम्बी से प्राप्त इसके शासन वर्ष 2 का एक अभिलेख प्राप्त हुआ है जिससे अब यह अभिलेख पहला नहीं रह गया। पर इतना तो स्पष्ट ही है कि यह उसके शासन काल के प्रारम्भिक वर्षों का है। यह कनिष्क के राजसंवत्सर 3 का है। इससे स्पष्ट है कि कनिष्क के कर्मचारियों एवं उत्तराधिकारियों द्वारा कनिष्क के सिंहासनारोहण के समय से यह गणना व्यवहार में आता होगा। विद्वानों का मत है कि शक-क्षत्रपों द्वारा यह गणना अपनाई गई थी। इसी से 78 ई॰ से प्रचलित होने वाले शक-संवत् को ही इस संवत् की मान्यता दी जाती है। पर यह विचार सर्वमान्य नहीं रह गया है क्योंकि कुषाण संवत् ही शक संवत् है ऐसा कुछ लोग नहीं मानते। वे कुषाण संवत् का प्रारम्भ दूसरी शती ई॰ में मानते हैं। पर इसे अन्तिम रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

इस लेख से कनिष्क के साम्राज्य विस्तार का अनुमान कुछ लोगों ने लगाया है। वे बनारस तक उसका राज्य राज्यारोहण के वर्ष 3 में मानते हैं। इसकी पुष्टि में उन्होंने ठीक इसी प्रकार का इसका एक दान अभिलेख कौशाम्बी से प्राप्त होने पर यह मत व्यक्त किया है कि इस समय तक प्रयाग और वाराणसी उसके राज्य के अंग थे। यही विचार डा॰ गोयल का भी है। पर इसके मानने में कठिनाइयाँ है। उसका दाता भिक्षु बल वाराणसी का रहने वाला नहीं प्रतीत होता। वह तीर्थयात्रा के लिए यहाँ आया होगा क्योंकि उसके द्वारा श्रावस्ती (आधुनिक उ॰ प्र॰ के गोंडा जनपद का सहेत-महेत नामक स्थान) में भी ऐसे ही दान का उल्लेख है जो सिद्ध करता है कि वह अपने यात्रा-क्रम में यहाँ भी गया होगा। दूसरे यह मूर्ति फतेहपुरसीकरी से प्राप्त होने वाले लाल चित्तीदार पत्थर की है। सारनाथ जो कनिष्क के काल में एक प्रमुख कलाकेन्द्र था, फिर भी यहाँ के शासक को मथुरा से यह मूर्ति यहाँ लाने की आवश्यकता क्यों पड़ी ? स्पष्ट है कि वहीं से मूर्ति बनवाकर तथा लेख खुदवाकर वह यहाँ लायी गई होगी। तीसरे वनस्पर और खरपल्लान यहाँ के क्षत्रप थे, इस बात को स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि पहले लेख में वनस्पर को क्षत्रप तथा खरपल्लान का उपाधिविहीन उल्लेख है। पर दूसरे लेख में खरपल्लान को महाक्षत्रप तथा वनस्पर का उपाधिविहीन उल्लेख है। यहाँ एक ही समय दो प्रकार से क्षत्रप और महाक्षत्रप का उल्लेख उनके वाराणसी के शासक न होने का बोधक है। साथ ही शासक के लिए क्षत्रप के साथ महाराज शब्द की भी अपेक्षा की जाती है। डॉ॰ चितरंजन प्रसाद सिन्हा के अनुसार इनका उल्लेख माता, पिता, उपाध्याय, आचार्य के साथ किया गया है। अतः ये भी उनके आर्थिक सहयोग से बने होंगे जिससे उसका नाम इन अन्य लोगों की पंक्ति में अंकित है।

धार्मिक दृष्टि से भी यह अभिलेख महत्त्व का है। इसमे बौद्ध धर्म की महत्ता को उजागर किया गया है। इसमें मूर्ति का दाता भिक्षु बल है। भिक्षु का सम्बन्ध बौद्ध संघ से होता है। दूसरे त्रिपिटकविद बुद्धमित्रा का यहाँ उल्लेख है जो कोसम के मूर्ति लेख में उसकी प्रतिष्ठापिका बताई गई है तथा मथुरा के हुविष्क के शासन के 33वें वर्ष के बुद्ध मूर्ति अभिलेख में भिक्षु बल की शिष्या है। तीसरे त्रिपिटकाचार्य शब्द त्रिपिटक (बौद्ध धर्म का ग्रन्थ विशेष) की महत्ता को उजागर करता है। चौथे बोधिसत्व की महता को प्रकट करता है कि यह देवता सभी प्राणियों के हित और सुख के लिए पूजा जाता था। पाँचवें इससे ज्ञात होता है कि इसके पूर्व बोधिसत्व की महत्ता समाज में अज्ञात थी। यदि यह ज्ञात रहती तो यहाँ कहने की आवश्यकता ही नहीं रहती। छठें चारों परिषदों का उल्लेख स्पष्ट करता है कि बौद्ध धर्म में उपासकों के चार प्रकार थे जिनका अपना संगठन (परिषद) होता था। डॉ॰ सरकार के अनुसार ये हैं—भिक्षु, भिक्षुणी, गृहस्त उपासक पुरुष तथा स्त्री। सातवें 'चंक्रम' शब्द का सम्बन्ध बौद्ध धर्म से ही है। इसका अभिप्राय यहाँ है वाराणसी में भगवान् बुद्ध के चंक्रम पथ से (सरकार के अनुसार)। पर कुछ लोग इसका अर्थ बौद्ध विहार का प्रांगण लेते हैं। जो भी हो बौद्ध धर्म से ही इसका सम्बन्ध है। आठवें वाराणसी बौद्ध धर्म का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र था। इसी प्रकार के लेखों का कौसाम्बी, श्रावस्ती तथा मथुरा से मिलना इन स्थानों का पारस्परिक सम्बन्ध प्रदर्शित करता है। यह भी ज्ञात होता है कि ये सभी बौद्ध धर्म के तीर्थस्थल थे।

कला की दृष्टि से ज्ञात होता है कि मथुरा कुषाण कला का एक विकसित केन्द्र था। यहाँ से मूतियाँ निर्मित होकर बाहर भेजी जाती थीं। इस केन्द्र में लाल चित्तीदार पत्थर पर जो पड़ोसी फतेहपुरसीकरी की खदान से निकाले जाते थे। कला का अंकन किया जाता था यह भी कहा जा सकता है कि बोधिसत्व की मूर्तियों का स्वरूप अभी विकसित नहीं था। इसी से इसका नाम तथा विशेषताएँ उत्कीर्ण करानी पड़ी थीं। अतः बाद के विकसित अवस्था के किसी भी मूर्ति पर ऐसा अभिलेख नहीं ज्ञात होता। इसको स्थापित करने वाला भिक्षु बल था। वह बौद्ध संघ का एक परिब्राजक (संन्यासी) था। उसने संघ के सहयोग से इसका निर्माण कराया होगा। अतः संघ भी कला के निर्माण में योगदान देता था।

2. कनिष्क प्रथम का सूई-विहार ताम्रपत्र लेख (वर्ष 11)

(Suibihar Copper Plate Inscription of Kanishka I [year 11])

स्थान : सूई-विहार स्तूप (पाकिस्तान मे् बहावलपुर के समीप)

भाषा : संस्कृत, प्राकृत प्रभावित

लिपि : खरोष्ठी

काल : स॰ 11 (= 89 ई॰)

विषय : कनिष्क के काल का धर्म सम्बन्धी उल्लेख।

मूल-पाठ

1. महरजस्य रजतिरजस्य देवपुत्रस्य क[निष्कस्य] संव[त्स]रे एकदशे सं 10(+) 1 दइसिंकस्य[1] मस[स्य] दिवसें[2] अठविशे दि 20 (+) 4 (+)4

1. पढ़ें : दइसिकस्य यह ईरानी महीने का नाम है जो भारतीय जेठ आषाढ़ मास होगा।

2. पाठ दिवसे